बाप पूछते हैं कि किसके पास आये हो?और सत्संगों में ऐसे नहीं समझते हैं कि हम बेहद के बाप के पास जाते हैं। बच्चे जानते हैं कि जो हमारे कुल के होंगे वो जरूर बाप से आकर वर्सा लेंगे। यह ज्ञान मार्ग है। भक्तिमार्ग नहीं है। आधा कल्प यह भक्ति की है। सतयुग में भक्ति होती नहीं है। भक्ति में मनुष्य थक जाते हैं। बीमार हो जाते हैं। यहां तो तकलीफ होने की कोई बात ही नहीं है। सदैव खुशी ही रहती है। पवित्र तो बनना ही है ना। जब तक पवित्र नहीं बनेंगे तब तक मुक्तिधाम जीवनमुक्तिधाम में जा नहीं सकते हैं। जो बच्चे एडॉप्ट होते हैं वो समझते हैं कि इनसे हमको यह2 वर्सा मिलना है। तुम भी जानते हो कि हमको बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। बाप आये हैं नई दुनियां स्थापन करने। भल है तो बहुत ही साधारण। कितना उंच मर्तबा मिलता है। विश्व की बादशाही मिलती है। सतयुग में उनकी राजधानी थी। और धर्म तो सभी खतम हो जावेंगे। गाया भी जाता है कि बाप आकर ब्राह्मण ,देवता,क्षत्रिय.....धर्म स्थापन करते हैं। सिर्फ कृष्ण का नाम डालने से ही सारा काम अगड़म–बगड़म हो गया है। भगवान ने ही राजयोग सिखाया है। कृष्ण तो भगवान नहीं है ना। भगवान वो ही है। उंच ते उंच भगवान एक ही है। रचता भी एक ही है। वर्णन भी उनका ही होता है। सृष्टि का चक्र बच्चों की बुद्धि में है। अगर कोई मित्र–सम्बंधी आदि साथ नहीं देते हैं तो फिर छोड़ देना चाहिए। समझा जाता है कि यह नहीं चल सकेंगे। विघ्न भी तो पड़ते हैं ना। प्यार से हर्षितमुख बनकर समझाना है। तंग नहीं होना है। कल्याण करने की कोशिश करनी है। हमारा तो धर्म ही है किसी का कल्याण करना। कोई तो बहुत2 समय भी लेंगे। गाया भी हुआ है ना हे प्रभु तेरी लीला.....तुम बच्चे भी कहते हो कि बाबा आपकी जो समझाने की युक्तियां हैं वो (ऐसी हैं)और कोई में (ताकत)नहीं है। ऐसे भी नहीं है कि रचना कोई नई रचते हैं। रचना तो है ही। सिर्फ बाप आकर पुरानी दुनियां को चेंज करते हैं। मनुष्य नहीं जानते हैं कि 84का चक्र कैसे चलता है। बच्चे ही समझते हैं। समझते हैं कि अब हमारा 84का चक्र पूरा हुआ है। अब हम वापस घर जाते हैं। विनाश भी सामने खड़ा है। बाबा पवित्र बनाने आया है। पवित्र जरूर बनना है। तुम सभी को सबका रास्ता बताते हो। तुम्हारा आवाज बहुत फैलता है। रात–दिन सर्विस का ही खयाल रखना है कि कैसे कोई को समझावें। खर्चा होवे तो हर्जा नहीं है। इनका भी सारा दिन यही खयालात चलते हैं। अब बच्चे आपस में मिलेंगे। क्या2 करना है जो कि सभी का कल्याण हो। बाबा ड्रामा अनुसार ही मंजूरी देते भी हैं। अच्छों2 को मंगवाया जाता है। यह सारा बॉम्बे वाले रमेश को ही खयाल चलता है कि सर्विस कैसे हो। जो कुछ भी पास्ट हुआ है वो सब ड्रामा अनुसार। ड्रामा में जो कुछ भी है वो ही होने का है। पास्ट में जो कुछ हुआ है सो खतम। भूल भी ड्रामाअनुसार ही होनी है। नाराज नहीं होना चाहिए। इस समय अगर भूल भी होती है तो उसमें भी कल्याण भरा हुआ है। पैगाम तो सबको देना ही है। बाप तो एक ही मंत्र देते हैं कि घर में बैठे ही हुये मुझे याद करो। देह के सभी सम्बंध छोड़कर अपने को आत्मा समझकर मुझे याद करो। सभी को वापस जाना है यही बार2 तुम बच्चों को भूल जाता है। पुरुषार्थ करना करवाना है। चित्र भी जो बनवाये जाते हैं उसमें भी कोई भी एतराज उठा नहीं सकते हैं। बच्चों को रचता की रचना का आदि–मध्य–अंत का सारा ज्ञान बुद्धि में है। बाकी तो पुरुषार्थ चलता है दैवी गुण धारण करने लिए। माया के विघ्न पड़ते हैं। तूफान आते हैं। बाबा से पूछ भी सकते हो। सर्जन तो सभी का एक ही है ना। हर एक अपना2 पूछ सकते हैं कि इस2 बात में क्या करना है। बाबा सभी रास्ता बतावेंगे। मनुष्य चित्र देखकर बहुत वंडर खावेंगे। दुनियां के मनुष्य पवित्र थे। अब अपवित्र हैं। अब बाप कहते हैं कि मुझे याद करो तो पावन बन जावेंगे। ऐसे2 बच्चे सर्विस कर सकते हैं। वो तो है जिस्मानी सोशल सर्विस। तुम हो रुहानी सर्विस में। सदैव प्रेम से ही रहना है। लून–पानी कुछ भी नहीं होना चाहिए। शिवबाबा मीठा है तो उनके बच्चे हो ना। बच्चों को गुडनाइट।